विद्या भवन बालिका विद्यापिठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत 26 नवंबर 2020

वर्ग सप्तम राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित।

द्वादशः पाठः

जगद्गुरूः शड़कराचार्यः

आदिगुरोः शङ्कराचार्यस्य जन्म केरल प्रान्ते कालडी नामके ग्रामे अभवत्।

आदि गुरु शंकराचार्य का जन्म केरल प्रांत के कालडी नामक ग्राम में हुआ था।

अस्य पितुः नामः शिवगुरू आसीत्।

इनके पिता का नाम शिव गुरु था ।

अस्य जन्मनः प्रागेव सः दिवंगतः।

इनके जन्म के पहले ही हुआ मर गए।

माता आर्याम्बा एवास्य पालनमकरोत्।

माता आर्यम्बा इनका पालन पोषण किया ।

जन्मनैव प्रतिभासम्पन्नतया सः कुलोचिताः विधाः शीघ्रमेव अधीतवान्।

जन्म से ही प्रतिभा संपन्न और वह कुल में प्रचलित उचित विद्या को जल्दी ही प्राप्त किया।

मनसा वचसा कर्माणा च विरक्तः शङ्करः मात्रा संन्यासस्यानुमतिम् अयाचत्।

मनसे, वचन से और कर्म से विरक्त होकर शंकराचार्य ने माता से सन्यासी बनने का अनुमति माँगा।

पुत्र स्नेह परवशा स शक्रस्य इमां प्रार्थनां न स्वीकृतवती।

पुत्र के प्रेमवश के कारण शंकराचार्य का प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकी।